नागार्जुन का खंडकाव्य 'भूमिजा'- एक लोकदृष्टिपरक अध्ययन

डॉ. अंबिली टी

लोक, मनुष्य समाज का वह वर्ग है, जो अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता एवं पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है। 'भूमिजा' में रामकथा को प्रगतिशील यथार्थवादी जनदृष्टि द्वारा वैचारिक कसौटी पर परखने के उद्देश्य से कवि नागार्जुन ने उसके तीन प्रसंगों को चुन लिया है। तीनों प्रसंग लोकभूमि में घटित हैं।

'भूमिजा' की रचनाभूमि लोकजीवन का व्यापक क्षेत्र है। यह लोकजीवन, न मात्र समकालीन है और न ही देशकाल सीमित। इस खंडाकाव्य का केंद्रपात्र भूमिजा अर्थात् सीता, लोकतंत्री भूमि से उपजी है। लोकधर्मी सीता के त्याग, तपस्या और साधना के सामने अयोध्या की रीति-नीति या आदर्श फीके पड़ते हैं। भूमि से उत्पन्न है सीता। रामायण की नायिका, राम की पत्नी, रावण द्वारा छीन ली गई सीता मिथिला राजा जनक को मिट्टी से प्राप्त लड़की, वही सीता है नागार्जुन का खंडकाव्य 'भूमिजा' की सीता। नागार्जुन ने अपनी लोकदृष्टि द्वारा, उपेक्षित जीवन बिताने वाली सीता के त्याग को मूल्य देकर प्रस्तुत किया है। 'जहाँ से मैं आई, वही अच्छा है'- यह समझकर स्त्री जन्म का प्रतीक सीता भू माँ की कोख में समा जाती है। यथा सीता कहती है-

मेरी जननी लेगी मुझे समेट
पाऊँगी मैं माँ की शीतल गोद।[1]

'भूमिजा' में सीता अपनी लोकतंत्री मातृभूमि विदेहराज्य और वहाँ के प्रबुद्ध जनों की तुलना, अयोध्या के कृत्रिम मर्यादा के बने आडंबर से करती हुई अपने त्रिकाल का लेखा-जोखा भी प्रस्तुत करती है। सीता का कथन है-

अयोनिज मैं तुम थे आभिजात
तुम्हारा तो था कुल अवदात
जनक थे मेरे पालनहार
नहीं थी मैं औरस संतान।[2]

सीता को अयोध्या बर्दाश्त नहीं कर पाई। उसे वाल्मीकि जैसे युगद्रष्टा कवि का आश्रय मिलता है। वह अपने बच्चे लव और कुश को इसी लोक परिवेश में सामर्थ्यवान बनाती है। सीता अभिजात परिवार में नहीं जन्मी थी। उसके जन्म के संबंध में इस प्रकार कहा गया है-

कि कोई जोत रहा था खेत
पसीने से लथपथ थे गात
मुखरे थे कड़ियों में जनगीत।[3]

जनकराज द्वारा पालित पुत्री के रूप में सीता का पालन-पोषण जनकपुरी में हुआ था। उस काल के बारे में इस प्रकार कहा गया है-

सुलभ था मुझे सभी का लाड
रानियाँ बरसाती थीं प्यार
तरुणियाँ थी सौ-सौ हम उम्र
तरुण भी थे दस बीस पचास
दिव्य सुख हासिल थे अविराम।[4]

लोकतंत्री धरती से सीता उपजी है। वही धरती अंत में उसकी चिता बनी। धरती उसके लिए माँ-बाप, बिस्तर, बिछावन सबकुछ है। राम का अभिजातकुल सीता को पचा नहीं सका।

'भूमिजा' के राम, राजा की मर्यादा से युक्त प्रौढ़ एवं तथाकथित पुरुषोत्तम राम नहीं। वे तरुण सुलभ कुतूहल से युक्त कपटताविहीन होकर वन प्रांत में ऋषि विश्वामित्र के शिष्य के रूप में रहते हैं। ये जन हितैषी हैं, गुरुकुल के संचालक हैं। ये ऋषियों के यज्ञ की रक्षा करते हुए राक्षसों को मारते हैं। पुरुषवर्ग के अविश्वास से अभिशप्त होकर पाषाणी बनी अहिल्या को वे आत्मेचतना दानकर पुनर्जीवित करते हैं। इन प्रसंगों में राम पूर्ण रूप से लोकधर्मी रहे हैं। उनपर राजधर्म का लेशमात्र भी प्रभाव नहीं। भूमिजा के राम पूरी रामकथा के राम से अधिक जनोनुकूल, शाश्वत एवं सनातन हैं। उत्तराधिकार के रूप में शासन का अधिकार प्राप्त श्रीराम लोकतंत्र द्वारा चुने गए शासकों के लिए भी आदर्श पुरुष बन जाते हैं। नागार्जुन की राय में आज के अपवाद और आरोपण के शिकार बने लोकतंत्री शासकों के लिए रामराज्य की स्थापना करके उसका संरक्षण करने वाले श्रीरामचंद्र जी आदर्श राजा हैं। लोकदृष्टि के कारण ही राम गौतम मुनी के साधारण आश्रम के पास पड़ी हुई निर्जीव पाषाणी को देखकर तत्काल ही हतप्रभ हो जाते हैं। तब अपने भाई की इस दशा को देखकर लक्ष्मण पूछता है कि-

साधारण सी इस प्रतिमा में आई
क्या है जिससे हुआ आपको खेद?

पाषाणी के सिर से लेकर तल्वे तक राम मनोयोग के साथ हाथ फेरने लगे। पुरंत ही पाषाणी में चेतना का संचार हो गया। तब शंकित होकर पाषाणी पूछती है-

पाषाणी में किया प्राणसंचार
कौन देव तुम मेरे हृदयाधार?

इस घटना में राम की लोकदृष्टि ही झलकती है। राम अहिल्या को अपना परिचय देते हुए उससे कहते हैं-

कोसलेश दशरथ के हम हैं पुत्र
राम लखन से साधारण है नाम।

इस उक्ति में राम की विनयभावना का परिचय है। यह भी नहीं, आगे वे अहिल्या के पैरों को छूकर कहते हैं-

छूकर देवी तुम्हारे दोनों पैर
होता हूँ मैं आज प्रतिज्ञाबद्ध।

एक अन्य प्रसंग में राम अपने भाई लक्ष्मण से पूछते हैं-

कहाँ मिलेगी ऐसी उर्वर भूमि
कहाँ मिलेगा इतना सुंदर देश
ऐसी माटी कहाँ मिलेगी वत्स!

यहाँ कवि हमारी ओर संकेत करते हैं कि राजधर्म से श्रेष्ठ है लोकधर्म, यानी जनोनुकूलता।

महर्षि विश्वमित्र के साथ वन यात्रा करते समय उनसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनने में इच्छुक भाइयों के चित्र हमें भूमिजा में मिलते हैं। दोनों भाइयों के लिए राजमहल के वैभव की अपेक्षा, वनयात्रा, सरयू-गंगा संगम, आश्रम आदि के दृश्य प्रियंकर हैं। अपने पूर्वजों का गुणगान सुनने में वे अत्यंत आकांक्षी हैं। वे गंगा को देवी समझते हैं। क्योंकि उसकी गोद में वंशधरों की अस्थियाँ समर्पित हैं। राम पूर्ण रूप से लोकधर्मी हैं, राजधर्मी नहीं। वे अधिक जनोनुकूल हैं। इस खंडकाव्य में राम का परिचय इस प्रकार दिया गया है-

भूमिजा के राम पूरी रामकथा के राम से अधिक जनोनुकूल अंततः शाश्वत एवं सनातन हैं।[10]

राम के पुत्र लव और कुश भी राजकीय वैभव में नहीं, वाल्मीकि के साधारण आश्रम में पलते हैं। कवि इसकी ओर संकेत करके कहते हैं कि-

बीहड पथ के चारण वज्र कठोर
ये निसर्ग प्रिय, श्यामल युगल किशोर
इनके लेखे क्या तो है साकेत?
राजकीय वैभव का क्या है मूल्य?[11]

लोकसंस्कृति में पलनेवाले इन राजकुमारों का स्वभाव रामराज्य के अधिप राम और भाई लक्ष्मण के दृढसंकल्प से अधिक प्रतीत होता है। दोनों कुमार धनुष चलाकर जंगल के जानवरों एवं वनवासियों के बीच आराम से रहते हैं। वे बाधाओं से भरे जंगली बीहड पथ पर घूमते रहते हैं। वे दोनों वज्र के समान मज़बूत और प्रकृति के प्यारे हैं। इनके लिए साकेत अर्थात् अयोध्या का राजकीय वैभव कृत्रिम है। बाघ के बच्चों से इनकी दोस्ती हैं। तालाब और नदी किनारे का क्षेत्र मानो इनका ही राज्य है। जंगली-पहाड़ी लोग उन्हें चढ़ावा देते हैं। इनकी धनुर्विद्या देखकर ये लोग दंग रह जाते हैं। इनका पालन-पोषण तापसियों द्वारा होता है। ये राजकुमार वास्तव में तरुण तपस्वी की तरह लग रहे हैं। इन बच्चों

को लोक संस्कार ही प्राप्त हुआ है। यह अयोध्या नगरी की झूठी मर्यादा को तोड़ने और राजधर्म को लोकधर्म में बदलने में सहायता पहुँचा देगा। 'भूमिजा' में इसका संकेत है। लव और कुश को प्राप्त लोक संस्कारयुक्त व्यक्तित्व ज्यादा प्रभावपूर्ण साबित होता है।

संक्षेप में कहें तो 'भूमिजा' पूर्ण रूप से एक लोकधर्मी रचना है। लोकधर्म की कसौटी पर कसने के लिए ही कवि नागार्जुन ने चतुर जौहरी के समान रामकथा के तीन प्रसंगों को सावधानी से चुन लिया है।

संदर्भ सूची-

1. भूमिजा-संस्करण 2017 - पृष्ठ 66
2. भूमिजा - पृष्ठ 60
3. भूमिजा - पृष्ठ 60
4. भूमिजा - पृष्ठ 62
5. भूमिजा - पृष्ठ 47
6. भूमिजा - पृष्ठ 49
7. भूमिजा - पृष्ठ 50
8. भूमिजा - पृष्ठ 57
9. भूमिजा - पृष्ठ 34
10. भूमिजा - आवरण पृष्ठ
11. भूमिजा - पृष्ठ 63

– सहायक आचार्या, हिंदी विभाग सरकारी कॉलेज, चिट्टूर, पालक्काट

❑❑❑

REJI T
2024.05.0
2 14:32:02
+05'30'